B.A Part-2 Psy. Hons. Paper-3 Topic- Comparative study of Laboratory Experiment and Field Experiment. Study material by Dr. Prabha Shree (Guest Faculty Deptt of Psychology, Vaishali Mahila College, Hajipur)

प्रयोगात्मक शोध में शोधकर्ता अध्ययन किए जाने वाले चरों में जोड़-तोड़ सीधे या प्रयोगात्मक रूप से करता है तथा उस जोड़-तोड़ का पड़ने वाला प्रभाव दूसरे चर पर देखता है। जिस चर में सीधे जोड़-तोड़ की जाती है उसे Type-E स्वतंत्र चर कहते हैं। प्रयोगात्मक शोध यदि प्रयोगशाला (Laboratory) में किया जाता है तो इसे प्रयोगशाला प्रयोग (Laboratory Experiment) तथा यदि यह शोध क्षेत्र (field) में किया जाता है तो इसे क्षेत्र प्रयोग (Field Experiment) कहा जाता है। प्रयोगात्मक शोध का सबसे ज्यादा प्रयोग प्रयोगात्मक मनोविज्ञान तथा

व्यवसायिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में हुआ है। प्रयोगात्मक विधि मनोविज्ञान की सबसे प्रमुख एक वैज्ञानिक विधि है। प्रयोगात्मक विधि का आधार प्रयोग होता है। साधारणतः किसी व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रिया को नियंत्रित अवस्था में क्रमबद्ध अध्ययन या निरीक्षण करना ही प्रयोग होता है। इस तरह हम देखते हैं कि सामान्यतः प्रयोग दो प्रकार के होते हैं, प्रयोगशाला प्रयोग एवं क्षेत्र प्रयोग। प्रयोगशाला प्रयोग वह है जिसमें शोधकर्ता वैसी स्थिति उत्पन्न करता है जैसा कि वह अध्ययन करना चाहता है एवं जिसमें वह कुछ चरों को नियंत्रित करता है तथा कुछ चरों में जोड़-तोड़ करता है। इसका अर्थ है कि प्रयोगशाला प्रयोग में शोधकर्ता लक्ष्य चरों का नियंत्रण तथा स्वतंत्र चरों का जोड़-तोड़ आसानी से कर लेता है जिसके द्वारा वांछित अध्ययन काफी सुविधाजनक हो जाता है। क्षेत्र प्रयोग

एक ऐसा शोध अध्ययन है जो वास्तविक परिस्थिति में किया जाता है तथा जिसमें एक या एक से अधिक स्वतंत्र चरों में जोड़-तोड़ उतना सावधानीपूर्वक नियंत्रित अवस्था में किया जाता है जितना की परिस्थिति अनुमति देती है। क्षेत्र प्रयोग सदैव वास्तविक परिस्थिति में किया जाता है तथा बाह्य चरों को नियंत्रित करने का प्रयास किया जाता है। वास्तविक स्थिति का अर्थ खेल का मैदान, दफ्तर, फैक्ट्री इत्यादि है।

प्रयोगशाला प्रयोग तथा क्षेत्र प्रयोग का तुलनात्मक अध्ययन

1. बाह्य चरों का पूर्ण नियंत्रण तथा स्वतंत्र चर में जोड़-तोड़ का पूर्ण नियंत्रण के कारण परिणाम अधिक शुद्ध व वैध होते हैं। जबकि क्षेत्र प्रयोग में बाह्य चरों का या स्वतंत्र चरों का परिस्थिति

के अनुसार ही नियंत्रण संभव है जिसके कारण आंतरिक वैधता की कमी रहती है।

2. प्रयोगशाला प्रयोग में पुनः वही स्थिति उत्पन्न कर उसे दोहराया जा सकता है तथा परिणामों की पुनः जांच की जा सकती है परंतु क्षेत्र प्रयोग वास्तविक स्थिति में होने के कारण उसको दोबारा उन्हीं परिस्थितियों में दोहराना संभव नहीं है।

3. प्रयोगशाला प्रयोग में बाह्य वैधता का अभाव होता है, इसके कार्य क्षेत्र सीमित होता है जबकि क्षेत्र प्रयोग में बाह्य वैधता की पूर्ण प्राप्ति होती है एवं इसका कार्य क्षेत्र अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत होता है।

4. प्रयोगशाला प्रयोग अधिक खर्चीला तथा अधिक समय लेने वाला शोध होता है जबकि क्षेत्र प्रयोग अपेक्षाकृत कम खर्चीला शोध होता है।